बिभा कुमारी

हिंदी विभाग, विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय, राजनगर, मधुबनी

नौका – विहार का प्रतिपाद्य

कवि सुमित्रानंदन पंत की काव्य – यात्रा को जानना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इनकी 1932 के आसपास की रचनाओं में प्रकृति – चित्रण और दार्शनिक विचारात्मकता का अद्भुत सामंजस्य बन पड़ा है। प्रस्तुत कविता भी प्रकृति – चित्रण और दर्शनिक विचारात्मकता वाली कविताओं की श्रृंखला की ही एक कड़ी है। अपने प्राकृतिक चित्रण के संदर्भ में स्वयं पंत जी ने कहा है –

“प्राकृतिक चित्रणों में भावनाओं का सौन्दर्य मिलाकर उन्हें ऐन्द्रिय चित्रण बनाया है, कभी – कभी भावनाओं को ही प्राकृतिक सौन्दर्य का लिबास पहना दिया है।”

पंत की इस कविता के संदर्भ में डॉ. नगेन्द्र का कथन है –

“पंत जी की कविताओं में ‘नौका विहार’ अपने चित्रों के लिए प्रसिद्ध है। वास्तव में शब्द और तूली में इतना निकट संबंध हिंदी का कोई कवि स्थापित नहीं कर सका है।”

इस बात पर लगभग सभी विद्वान सहमत हैं कि प्रकृति – चित्रण, उत्तम कलापक्ष एवं ऐन्द्रिय संवेदनाओं के समन्वय की कसौटी पर ‘नौका विहार’ पंत जी की सर्वोत्तम रचना है। इस कविता में अत्यंत सुंदर बिम्ब अंकित किए गए हैं।

रात्रि के समय शांतिपूर्ण वातावरण में कवि अपने मित्रों के साथ ‘नौका – विहार’ के लिए निकले हैं। नौका विहार से पहले की पृष्ठभूमि को कवि ने बहुत जीवंत रूप में प्रस्तुत किया है। चारों ओर स्नेहमयी, शांत शुभ्र चंद्रिका फैली है। अनंत आकाश अपने नेत्रों से अपलक धरती – तल को निहार रहा है। धरती, नदी और नदी में नौका – विहार का सजीव चित्रण है। कवि प्रकृति के माध्यम से अनाद्यन्त ब्रम्ह के दर्शन करता है। कवि ने सम्पूर्ण कविता में आलंबन रूप में प्रकृति चित्रण किया है परंतु अंतिम स्थलों में वह दार्शनिक हो गया है।